KGG-DS/4.00/3N

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत) : उसके कारण मन में इस प्रकार का विचार आना भी बहुत स्वाभाविक है, लेकिन मैं नहीं मानता कि इनमें से कोई इस बात से असहमत होगा कि हमारे देश में आरोग्य के क्षेत्र में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। बहुत कुछ करने की आवश्यकता है, it does not mean कि गुलाम नबी जी जब हेल्थ मिनिस्टर थे, तब कुछ नहीं किया। उन्होंने कुछ तो किया ही होगा, लेकिन बहुत कुछ करने की आवश्यकता है, इससे तो हम इनकार नहीं कर सकते। इसलिए हम चर्चा की इस बात को भी समझें कि देश की आशा-अपेक्षाओं के अनुरूप हम कुछ बातों को कैसे कर सकते हैं।

अब यह ठीक है कि हम "आयुष्मान भारत योजना" लेकर आए हैं, हो सकता है उसमें कमियाँ हों, लेकिन आखिरकार यह योजना देश के लिए है, किसी दल के लिए तो है नहीं। मैं चाहूँगा कि कांग्रेस के मित्र भी एक टास्क फोर्स बनाएँ, और दलों के लोग भी अपनी-अपनी टास्क फोर्स बनाएँ और "आयुष्मान भारत योजना" की स्टडी करें। अगर उसमें कुछ कमियाँ हैं, तो मैं खुद कुछ समय दूँगा। उसका अल्टिमेट उद्देश्य क्या है? उसका अल्टिमेट उद्देश्य है, देश में गरीब और निम्न-मध्यम वर्ग का परिवार। अगर बीमारी उसके घर में आती है, तो जो कुछ भी उसने किया-कराया है, वह सब ज़ीरो पर आकर अटक जाता है, नेगेटिव चला जाता है। कभी उसको सूदखोरों से ब्याज पर पैसे लेकर उपचार कराना पड़ता है। कभी वह सोचता है कि बेटों को कर्ज में डुबाना नहीं है, बीमारी झेल

लो, जिन्दगी कम हो जाए, तो हो जाए। यह psyche बनी हुई है। किसने किया, किसने नहीं किया, 70 सालों में क्यों नहीं हुआ, ये सारे सवाल उठ सकते हैं, लेकिन मेरी चर्चा का विषय वह नहीं है। क्या हमें ऐसा कुछ करना चाहिए या नहीं करना चाहिए? सरकार जो सोचती है, आप जैसी हमारी सोच नहीं है कि भगवान ने सब कुछ हमें ही दिया है। हम मानते हैं कि यहाँ सदन में हमसे भी कई गुना विद्वान और अनुभवी लोग हैं। उनकी विद्वता, उनका अनुभव हमारे सामने है। यहाँ के बाहर भी इस देश में बहुत विद्वान और अनुभवी लोग हैं। हम मिल-बैठकर यह सोचें कि क्या हम "आयुष्मान भारत योजना" को देश के 40-50 करोड़ लोगों तक पहुँचाकर उनमें अच्छे स्वास्थ्य के लिए एक विश्वास पैदा कर सकते हैं? यह एक इन्श्योरेंस स्कीम है। हम जानते हैं कि इन्श्योरेंस में किस प्रकार की व्यवस्था होती है। इसलिए बजट के प्रोविज़न वगैरह की चर्चा करके अटकने की आवश्यकता नहीं है, उस पहलू से हम भली-भांति परिचित हैं, लेकिन देश के गरीब को इसका लाभ मिले, मैं मानता हूँ कि यहाँ किसी को दिक्कत नहीं होनी चाहिए। हाँ, योजना लागू करने के बाद कुछ कमियाँ आई हों और उन पर ध्यान नहीं गया हो और तब आलोचना होती है, तो वह ठीक है। यह अभी सुझाव के पीरियड में है। अभी एक योजना का प्राथमिक विचार प्रस्तुत हुआ है। हमें यह सोचना चाहिए कि हम मिलकर उसको और अच्छा कैसे बनाएँ। इसलिए मैं तो चाहूँगा कि अच्छे सुझाव आने चाहिए। जो लोग मेरे आज के भाषण को टीवी पर सुनते होंगे, उनसे भी मेरा आग्रह है कि अगर आप इसमें कुछ अच्छी परफेक्ट चीज़ें दे सकते हैं, तो

दीजिए। यह देश के गरीब के लिए करना है। इसमें कोई दल नहीं होता है। मैं मानता हूँ कि हम सब मिलकर इस बात को आगे बढ़ाएँगे।

यह बात सही है कि अगर मैं यहाँ बैठकर अंग्रेज़ी में 9 लिखता हूँ, तो मैं नहीं मानता हूँ कि यहाँ बैठा कोई व्यक्ति इस बात से इनकार करेगा कि यह 9 है, लेकिन वहाँ बैठने वाले को वह 6 दिखेगा। मैं अंग्रेज़ी में यहाँ 9 लिखूँ, तो मैं गलत नहीं हूँ, लेकिन अब आपको वह 6 दिखता है, तो मैं क्या करूँगा, क्योंकि आप वहाँ बैठे हैं। अब कोई मुझे यह बताए कि अगर हिन्दुस्तान की 'Ease of Doing Business' रैंकिंग में कुछ सुधार होता है, तो हमें दुःख क्यों होना चाहिए? क्या इस देश के हर नागरिक को गर्व नहीं होना चाहिए कि 'Ease of Doing Business' हुआ, दुनिया में हमारी एक छवि बनी? देश के लिए यह एक अच्छी बात बनी है।

(3ओ/एमसीएम पर जारी)

MCM-KLS/3O/4.05

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत) : अब हमने किया, आपने किया, वह मुद्दा जब हम चुनाव में जाएँगे, तब खेल लेंगे, लेकिन जब देश की बात होती है, तो अच्छा है। हम यहाँ तक चले जाते हैं कि जब हम किसी रेटिंग एजेंसी को यह दें, तो हम पर हमला बोलना कभी संभव नहीं होता है, तो उस रेटिंग एजेंसी पर ही हमला बोल देते हैं। दुनिया में शायद ऐसा कहीं नहीं होता होगा। कभी-कभी तो मैं अनुभव कर रहा हूँ कि आपको भारतीय जनता पार्टी की आलोचना करनी चाहिए,

जमकर के करनी चाहिए, आपका हक है। मोदी की आलोचना करनी चाहिए, जमकर के करनी चाहिए, बाल नोंच लेने चाहिए। डेमोक्रेसी में आपका पूरा हक है, लेकिन भाजपा की बुराइयाँ करते-करते आप भूल जाते हैं और भारत की बुराई करने लग जाते हैं। आप फिसल जाते हैं। आप मोदी पर हमला बोलते-बोलते हिन्दुस्तान पर जाकर हमला बोल देते हैं। जहाँ तक भाजपा और मोदी की बुराई करने की बात है, राजनीति में आपका हक है और आपको करना भी चाहिए, लेकिन इसके कारण आप मर्यादा लांघ देते हैं और उसके कारण देश का बहुत नुकसान होता है। यह ठीक है कि आप यह कभी नहीं स्वीकार कर पाएँगे कि यहाँ हमारे जैसे लोग बैठे हों। कैसे स्वीकारेंगे? आपकी पीड़ा हम समझ सकते हैं, लेकिन मेहरबानी करके ऐसा मत कीजिए कि देश को नुकसान हो, देश की दुनिया में बदनामी हो।

अब यहाँ पर एक विषय आया। राष्ट्रपति जी ने अपने भाषण में न्यू इंडिया की कल्पना की है। स्वामी विवेकानन्द ने भी नये भारत की चर्चा की थी, महात्मा गांधी भी यंग इंडिया की बात करते थे, हमारे पूर्व राष्ट्रपति जी, जब वे पद पर थे, तब उन्होंने भी नये भारत की संकल्पना की बात कही थी। मुझे पता नहीं इन्हें क्या परेशानी है कि ये कहते हैं कि हमें न्यू इंडिया नहीं चाहिए। हमें तो हमारा वह भारत चाहिए, हमें पुराना भारत चाहिए।

MR. CHAIRMAN: Please. ...(Interruptions)... I would request all the Members not to make loose commentary while sitting. If any Member

has ...(Interruptions)... They can raise their hands. I will recognize them and call them. Please don't disturb when the Prime Minister is addressing the House and also participating in a debate. We must show 'maryada'.

श्री नरेन्द्र मोदी : हमें गांधी वाला भारत चाहिए, मुझे भी गांधी वाला भारत चाहिए, क्योंकि गांधी जी ने कहा था कि आजादी मिल चुकी है, अब कांग्रेस की कोई जरूरत नहीं है, कांग्रेस को बिखेर देना चाहिए। यह कांग्रेस मुक्त भारत मोदी का विचार नहीं, यह गांधी का है। हम तो उन पदचिन्हों पर चलने के प्रयास में हैं। अब आपको वह भारत चाहिए, आप कहते हैं कि हमें तो वह वाला भारत चाहिए, क्या सेना के जीप घोटाले वाला भारत, क्या पनडुप्पी घोटाले वाला भारत, क्या बोफार्स घोटाले वाला भारत, क्या हेलिकॉप्टर घोटाले वाला भारत? आपको न्यू इंडिया नहीं चाहिए, आपको वह भारत चाहिए ? आपको इमरजेंसी वाला, आपातकाल वाला, देश को जेलखाना बना देने वाला, जयप्रकाश नारायण, मोरारजी भाई देसाई जैसे लोगों को जेल में बंद करने वाला, देश में लाखों लोगों को जेल में बंद करने वाला इमरजेंसी वाला भारत चाहिए ? आपको ऐसा भारत चाहिए? लोकतांत्रिक अधिकारों को छीन लेना, देश के अखबारों पर ताले लगा देना, यह भारत आपको चाहिए। आपको कौन सा भारत चाहिए, वह भारत कि बड़ा पेड़ गिरने के बाद हजारों निर्दोष सिखों का कत्लेआम हो जाए,

(3P/SC पर जारी)

SC-SSS/4.10/3P

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत) : आपको यह भारत चाहिए ? आपको "न्यू इंडिया" नहीं चाहिए, आपको भारत चाहिए। आपको वह भारत चाहिए..(व्यवधान)..

श्री हुसैन दलवई : गोधरा को याद करिए।..(व्यवधान)..

MR. CHAIRMAN: Please sit down.

श्री नरेन्द्र मोदी : आपको वह भारत चाहिए, जब तंदूर कांड होता हो और रसूखदार लोगों के सामने प्रशासन घुटने टेकता हो ?..(व्यवधान).. आपको वह भारत चाहिए? हज़ारों लोगों की मौत के गुनहगार को विमान में बिठाकर उसे देश के बाहर ले जाया जाए, आपको वह भारत चाहिए ?..(व्यवधान).. दाओस में आप भी गए थे, दाओस में हम भी गए थे, लेकिन आप किसी की चिट्ठी लेकर के किसी को भेजते हैं - आपको वह भारत चाहिए ? ..(व्यवधान).. आपको "न्यू इंडिया" नहीं चाहिए ? ..(व्यवधान).. यहां पर राष्ट्रपति जी ने "जन-धन योजना" का उल्लेख किया है। आपने "जन-धन योजना" की भी आलोचना की थी। आपने कहा कि यह तो कुछ नहीं है, पहले हुआ था। मैं चाहूंगा कि कम से कम तथ्यों को हम स्वीकार करें, पोलिटिकली जो बोलना है, बोलते रहें। जो हम 31 करोड़ जन-धन अकाउंट्स की बात करते हैं, वे सारे के सारे 2014 में हमारी सरकार बनने के बाद जो खुले हैं, उन्हीं के हैं। इस record को कोई बदल नहीं सकता है, यह record उपलब्ध है। इसलिए मैं चाहता हूं कि आप तथ्यों को ज़रा ठीक कर लें तो

अच्छा होगा। आपने यह भी कहा कि हम तो name changer हैं, game changer नहीं हैं। अगर आप हमारे कार्यकलापों को देखेंगे और सच्चाई से कहना होगा तो आप कहेंगे कि हम तो aim chaser हैं। हम लक्ष्य का पीछा करने वाले लोग हैं और लक्ष्य प्राप्त करके रहते हैं। इसलिए हम जो लक्ष्य निर्धारित करते हैं, उसे समय सीमा में पार करने के लिए रोडमैप तैयार करते हैं, resources को mobilize करते हैं, कड़ी मेहनत करते हैं, ताकि देश को मुसीबतों से मुक्ति दिलाने की दिशा में हम भी कुछ योगदान करें। महोदय, कांग्रेस का तरसना बहुत स्वाभाविक है कि हमारी जय-जयकार करो, हमें बार-बार याद करो, हर जगह पर हमें याद करो - आपकी यह इच्छा रहना बहुत स्वाभाविक है। यह सुनते-सुनते आपको आदत हो गयी है कि इसके सिवाय कोई चीज़ अंदर फिट ही नहीं होती है। मुझे खुशी होगी - आप record चेक कर लीजिए कि 15 अगस्त को लालकिले पर आपके जितने प्रधान मंत्री हुए हैं, कांग्रेस पार्टी के प्रधान मंत्री, जो इस देश के प्रधान मंत्री हुए हैं, उनके भाषण में किसी और सरकार का, किसी और राज्य सरकार का, जिसके द्वारा इस देश की भलाई के लिए कोई काम हुआ हो, उसका उल्लेख किया हो। मैं हूं, जो लालकिले की प्राचीर से कहता हूं कि देश आज जहां पहुंचा है, अब तक की सभी सरकारों का उसमें योगदान है, सभी राज्य सरकारों का योगदान है। इसमें संकोच नहीं होना चाहिए। ..(व्यवधान).. हम इस बात के लिए तड़पते नहीं हैं कि आप अटल जी का नाम याद करो। हम तड़पते नहीं हैं।

..(व्यवधान)..आप मजबूरी में कह रहे होंगे तो ठीक है। आपको जो नाम ठीक लगे, आप दीजिए।

(3क्यू-पीआरबी पर जारी)

NBR-PRB/3Q/4.15

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत) : आपने यह भी कह दिया कि 2014 से पहले जो कुछ भी हुआ, सब आपके खाते में। क्रेडिट लेने की बड़ी इच्छा हो रही है। आपके नियम भी बड़े कमाल के हैं। जब हम छोटे थे, गांव में क्रिकेट खेलने वालों को देखते थे, तो छोटे-छोटे बच्चे खेलते थे और बाद में हम देखते थे end में झगड़ा होता था तो हमें बड़ा आश्चर्य होता था कि क्यों अभी तो खेल रहे थे और अब लड़ रहे हैं। फिर देखा कि उनका एक नियम होता था जिसके हाथ में बैट होता था, वह बैटिंग करता था और जैसे ही वह आउट होता था, वह बोलता था कि मैं चलता हूं। आप लोग भी यही हैं आगे चल कर बैटिंग आपको ही मिलेगी क्या ? और अब बैटिंग नहीं मिली तो बोला कि हम लोग जाते हैं। ...(व्यवधान)...

श्री सभापति: यह पद्धति नहीं है। What is happening? What is happening to the people? You are all hon. Members. You are supposed to listen to the other side. And, afterwards, if you want to say something, you will get an opportunity.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: Sir, we expected something better than this.

MR. CHAIRMAN: That is your expectation.

श्री नरेन्द्र मोदी: अब आधार की बात आती है, तो आप कहते हैं कि काम हमारा है और क्रेडिट आप ले रहे हो, अगर आप यह कहते हैं तो अच्छा है। लेकिन आपको यह याद रहना चाहिए कि 7 जुलाई, 1998 को इसी सदन में, और सभापति जी उस समय इसी सदन के सदस्य थे, तो 7 जुलाई, 1998 को उन्होंने इसी सदन में as a Member एक सवाल पूछा था और तब के गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी ने इसी सदन में जवाब दिया था और उस जवाब में उन्होंने कहा था, "Multipurpose National Identity Cards will also be used for issuing Passports, Driving Licences, Ration Cards, healthcare, admission in educational institutions, employment in public and private sector, life and general insurance, as also for maintenance of land records and urban property-holdings." आधार का बीज यहां है। 20 साल पहले ...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: Some people have got...Pradhan Mantriji, one minute. I would like to tell everyone....(Interruptions)... What happened to you, Renukaji? ...(Interruptions)...If you have some problem, go to a doctor, please. ...(Interruptions)... Sit down.

...(Interruptions)... Sit down, Smt. Renuka Chowdhury. ...(Interruptions)... Sit down. ...(Interruptions)... This is not the way. ...(Interruptions)...

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: I cannot resist... ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: I have to name you. ...(Interruptions)... Please, don't do that. ...(Interruptions)...

श्री नरेन्द्र मोदी: सभापति जी, आप आज रेणुका जी को कुछ मत कहिए...

MR. CHAIRMAN: I am suggesting to the Secretariat and also media not to report such loose talk and unruly behavior. ...(Interruptions)...

श्री नरेन्द्र मोदी: सभापति जी मेरी आपसे प्रार्थना है आप आज रेणुका जी को कुछ मत कहिए। रामायण सीरियल के बाद ऐसी हंसी सुनने का आज सौभाग्य मिला है। ...(व्यवधान)...

SHRI ANAND SHARMA: Sir. ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: You control your Members, please. ...(Interruptions)... I have to control everybody. ...(Interruptions)... Mr. Anand Sharma, this is not the way. This unruly behaviour cannot be appreciated. The entire country is watching us. ...(Interruptions)... We

should not become a laughing stock before the country. ...(Interruptions)...

श्री आनन्द शर्माः ये हंसे तो बुरा, वो हंसे तो अच्छा ...(व्यवधान)

श्री सभापतिः कोई हंसे तो अच्छा नहीं है। हंसना नहीं है...(व्यवधान)...हमको देखकर लोग हंस रहे हैं...(व्यवधान)... Nothing will go on record.

श्रीमती रेणुका चौधरी : *

श्रीमती स्मृति ज़ूबिन इरानी : *

***Not recorded.**

श्री नरेन्द्र मोदी : 20 साल पहले यह vision अटल बिहारी वाजपेयी का था लेकिन कांग्रेस कहती है कि आधार उसने शुरू किया तो भी हमें आपको क्रेडिट देने में तकलीफ नहीं है। आधार आपका। हमने दल से आगे देश को रखा है और हमारे निर्णय का आधार देशहित रहता है। आज क्रेडिट लेने के लिए आप बेताब हैं, बहुत स्वाभाविक है।

(3R/GS पर जारी)

GS-USY/3R/4.20

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत) : SIT बनाने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने आदेश किया था, आपने तीन साल तक उसका निर्णय नहीं किया, यह क्रेडिट आप ही को जाना

चाहिए। हमने पहली SIT का गठन किया, लेकिन आप कह सकते हैं कि हमारे सामने ऐसा विषय आया था। काले धन के खिलाफ कार्रवाई करने का क्रेडिट भी कांग्रेस स्वीकार कर ले। कांग्रेस ने 28 साल तक बेनामी सम्पत्ति कानून को लागू नहीं किया, उसकी क्रेडिट भी आप ले लीजिए।

श्री आनन्द शर्मा : लोकपाल का किसको देंगे?

श्री नरेन्द्र मोदी : अब तक 3500 करोड़ रुपये से ज्यादा सम्पत्ति - आपको पता होना चाहिए, माननीय आनन्द जी, आप लम्बे अरसे तक यहां बैठे हैं और बोलने की आपकी विशेष स्टाइल भी है और आप तो बर्फ का छुरा बनाकर भी घोंप सकते, जिसका पता भी नहीं चले, लेकिन यह बेनामी सम्पत्ति का कानून 28 साल पहले पारित हो चुका है, दोनों सदनों में पारित हो चुका था, लेकिन उसके रूल्स नहीं बनाये, नोटिफाई नहीं किया और वह अटका हुआ था। इसके लिए इनको किसने रोका, इसके लिए विपक्ष जिम्मेदार नहीं था, यह जानकारी के लिए है। मुझे अच्छा लगा कि आप जैसे नेताओं को भी कुछ...। अब तक 3500 करोड़ रुपये की बेनामी सम्पत्ति जब्त की है। अब आपके कार्यकाल में इतनी बेनामी सम्पत्ति बनी, तो क्रेडिट तो मिलना चाहिए। आपके लिए ही सारा क्रेडिट है। सारी दुनिया बदली है, मैं नहीं मानता हूं कि आपको Insolvency and Bankruptcy Code का ज्ञान नहीं था। लेकिन आपको क्रेडिट जाना चाहिए कि बहुत लोगों के लाभार्थ आपने इसको नहीं लगाया, क्रेडिट आपको जाना चाहिए ।

देश के इंडस्ट्रियल सेक्टर को, ग्लोबल कम्युनिटी को भारत के प्रति विश्वास पैदा हो, भारत के नियमों और कानूनों के प्रति विश्वास पैदा हो, हमने इसके लिए निर्णय किए। वन रैंक, वन पेंशन के लिए चार दशक तक देश की आंख में धूल झोंकते रहे और 500 करोड़ का बजट लेकर के चुनाव में चले गए, क्योंकि हवा बन चुकी थी कि अब क्या करें? जब हम आए, तो हमने देखा कि रिकॉर्ड तक नहीं थे, इस चीज़ को बहुत बारीकी से देखा और जब हमने इसको लागू किया, तो 11,000 करोड़ रुपये की जरूरत पड़ी। आप 500 करोड़ में इसे कैसे देते, तो अब ये सारी क्रेडिट आपको ही जाएगा।

GST के लिए मध्य रात्रि को समारोह हुआ, कांग्रेस ने इसका बहिष्कार किया। सभी दल आए और आपको यह लगा कि कहीं इसका हमारे को क्रेडिट मिल जाएगा और आप मानो या न मानो, आप जो कुछ भी कर रहे हो, GST के संबंध में इसकी जितनी भी निगेटिविटी है, वह आपके खाते में जमा हो रही है और होती रहेगी और देश के दिमाग में फिट हो जाएगा। आप लोग सोचिए - इसका क्रेडिट लेने की चिंता और खुद को क्रेडिट मिलता रहे।

अब नीम कोटिंग की बात आयी। आपकी तरफ से कहा गया कि इसको हमने शुरू किया था। जिस चीज़ को आप आधी-अधूरी छोड़ दें और आप इस पर कैप लगा दें कि इससे आगे नहीं जाना है, तब उस योजना का लाभ होने के मुकाबले नुकसान ज्यादा होता है। आखिरकार नीम कोटिंग के पीछे दो विषय थे, जिनका आपको भी ज्ञान था। एक, यूरिया की ताकत में वृद्धि होती है, इसलिए

किसान का कम यूरिया से काम चल सकता है। दूसरा, क्वालिटेटिव चेंज आता है, ताकि उत्पादन में वृद्धि होती है, यह मानी हुई बात थी। यूरिया किसानों के पास जाने के बजाय, यह कारखानों में चला जाता था, बिल किसान के नाम पर कटता था, सब्सिडी किसान के नाम पर कटती थी और यह कारखानों में चला जाता था। अगर हंड्रेड परसेंट नीम कोटिंग होती है, तो यह यूरिया किसी कारखाने में काम नहीं आएगा, यह आपको भी पता था। इसको 35 प्रतिशत करने के बाद 65 प्रतिशत का दरवाजा किसके लिए खुला रखा, यह क्रेडिट मैं किसको दूं और इसलिए मैं समझता हूं कि हंड्रेड परसेंट के पीछे हम लगे, इतना ही नहीं, जो इम्पोर्टेड यूरिया आता है, उसकी भी आने से पहले नीम कोटिंग होती है।

(HMS/3S पर जारी)

PK-HMS/3S/4.25

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत) : उसका भी आने से पहले नीम कोटिंग होती है और उसी का परिणाम है कि आज यूरिया की कोई किल्लत नहीं होती वरना मैं जब मुख्य मंत्री था तो मुझे हर वर्ष दो-तीन चिट्ठियां प्रधान मंत्री जी को यूरिया के लिए लिखनी पड़ती थीं। मैं जब यहां आया, तो सभी चीफ मिनिस्टर्स से यूरिया के बारे में चिट्ठी आती थी। आज एक चिट्ठी नहीं आती है और न कभी लाठीचार्ज होता है क्योंकि यूरिया लोगों को मिल रहा है। तो कुछ चीजें बदली जा सकती हैं।

मैं यह बताना चाहूंगा, कभी-कभी राजनीति बहुत हावी होती है, बार-बार चुनाव का यह नतीजा है कि योजना पूरी बनी हो या न बनी हो, हम पत्थर जड़

देते हैं, फीता काट देते हैं, तख्ती लगा देते हैं। फिर उस का परिणाम क्या हुआ? आप देखें हमें रेलवे के बजट में घोषणाएं बंद करनी पड़ीं। ऐसा क्यों हुआ? मैंने देखा कि पुरानी सरकारों ने 1500 से ज्यादा ऐसी रेलवे की योजनाएं घोषित कर दी थीं, जिन्हें बाद में कोई देखने वाला ही न था। एक दिन हाउस में तालियां बज गयीं, किसी अखबार में छप गया, उस एम0पी0 ने क्षेत्र में जाकर मालाएं पहन लीं और बात पूरी हो गयी। इस culture से देश का बहुत नुकसान हुआ है। आप हैरान होंगे, मैंने प्रगति technology का उपयोग करते हुए सारे रुके प्रोजेक्ट्स के बारे में initiative लेकर उनका review किया। आज सभी राज्यों के चीफ सेक्रेटरीज़ ऑन लाइन होते हैं, भारत सरकार के सभी सचिव होते हैं और मैं ऑनलाइन सब के साथ बैठता हूं। आप हैरान होंगे हमारे सामने ऐसे-ऐसे प्रोजेक्ट्स आए जोकि 30-40 साल पहले तय हुए, शिलान्यास हो गया, लेकिन बाद में कागज पर उनकी लकीर भी दिखायी नहीं दी, ऐसे ही पड़े रहे। मैं एक-एक प्रोजेक्ट का review करने लगा और मैंने यह नहीं कहा कि यह तो पुरानी सरकार का है, इस में मेरी क्या जिम्मेदारी है? आखिर यह देश एक continuity है, सरकारें आएं, जाएं, आप बैठें, दूसरा बैठे, तीसरा बैठे, हम इसे रोक नहीं सकते क्योंकि हमारे यहां लोकतंत्र है, लेकिन सरकार में हैं तो यह नहीं चलता कि यह तो जयराम रमेश जी के टाइम में हुआ था, इसे मारो ताला। नहीं, ऐसा नहीं होता है। आप हैरान होंगे 9 लाख करोड़ से ज्यादा के ऐसे प्रोजेक्ट्स मैंने अब तक clear किए हैं। मैंने सारी मिनिस्ट्रीज को बिठाया और कहा कि जो भी हो, इन्हें करो भले ही ये 30-40 साल

पुराने हैं। अब यही अगर उस समय हो गया होता तो शायद ये कुछ हजार करोड़ों में हो जाते, लेकिन आज 9-10 लाख के प्रोजेक्ट्स बन गए। इसलिए ये काम हम कर रहे हैं। आपने भी सरकार चलायी है, हम भी चला रहे हैं और जो भी सरकार बनाता है, उसे वह चलानी होती है क्योंकि वह उस की जिम्मेदारी होती है, लेकिन हम इन सब चीजों को अच्छी तरह से चलाते। आज सब जगह पर पत्थर लगे हैं, आप लोगों के नाम हैं। अब तो शायद लोग पत्थर की चोरी भी कर के गए हैं, लेकिन क्रेडिट सब आप को जाता है। ये योजनाएं आपकी रहीं।

अब यहां हमारे आज़ाद साहब ने Food Security Bill की बात की और वे date के साथ बोले। आप से यह कोई भी पूछेगा कि आप ने जो date दी, लेकिन हम तो आप के बाद आए, एक साल बाद आए। आप ने एक साल में इसे लागू क्यों नहीं किया? आपने यह भी कहा कि इस बारे में सुप्रीम कोर्ट ने पूछा। आप को पता होना चाहिए कि केरल, जहां आप की सरकार थी, उस ने इसे स्वीकार नहीं किया था और सुप्रीम कोर्ट ने डंडा मारा था, लेकिन अब आप वह भी हमारे सिर डाल देते हैं। वह आप को करना चाहिए था। मैं मान्यता हूं कि जो हम निर्णय करें, उसे पूरा करने की तैयारी के साथ उसे करना चाहिए। अब फर्टिलाइज़र के कारखाने खोलने के बारे में तो आप कह रहे हैं कि हमारे समय में हुआ, लेकिन बंद भी तो आप के समय में हुए, हजारों लोग बेरोजगार भी तो आपके समय में हुए। उसके लिए भी तो क्रेडिट लीजिए। इसलिए आज हम इसे लागू कर रहे हैं और नीतिगत बदलाव कर के कर रहे हैं। आप देखें, आज यू0पी0 में गोरखपुर, बिहार में बरौनी,

झारखंड में सिंदरी में यूरिया के जो कारखाने बंद पड़े थे, उन्हें हम तेज गति से आगे बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं। जगदीशपुर हल्दिया पाइप लाइन को उस के साथ जोड़ा है। यह नीतिगत बदलाव किया है ताकि उन्हें गैस मिल जाए और उस कारखाने को चलाने में सुविधा हो जाएगी। अब यह देश का वह इलाका है, जहां पर इस प्रकार की व्यवस्था से पूर्वी भारत के विकास की संभावना बढ़ जाएगी।

(3 टी/एएससी पर जारी)

ASC-PB/4.30/3T

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत) : ये वे स्टेट्स नहीं हैं, जहां भारतीय जनता पार्टी का झंडा फहरा रहा है। देश के लिए यह जरूरी है कि पूर्वी भारत के राज्यों का विकास होना चाहिए, देश का संतुलित विकास होना चाहिए। हम बिल्कुल सीधी-साधी डेवलेपमेंट की थ्योरी के आधार पर काम कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि आप इन चीजों को appreciate करेंगे।

हमारे माननीय सदस्य श्री अमित शाह का भाषण हुआ और मुझे अच्छा लगा कि आज़ाद साहब ने उसमें से यह खोजकर निकाला कि आपने इतना लम्बा भाषण दिया, सरदार पटेल के बारे में क्यों नहीं बोले? मुझे अच्छा लगा कि आपने सरदार साहब को याद किया। .....(व्यवधान).... अभी कुछ ही दिन हुए गुजरात में चुनाव हुए थे। हमारे बाहुबली यहां पर बैठे हुए हैं। उस चुनाव में कांग्रेस पार्टी के हर लिट्रेचर में सरदार साहब थे। मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि चलो, बहुत सालों के बाद यह दिन भी आया, मैं सोचता था कि यह परम्परा बनी रहेगी,

लेकिन गुजरात का चुनाव समाप्त हुआ और यहां आपकी पार्टी का एक कार्यक्रम था। अभी भी आप पुराने चित्र देख सकते हैं, बैकड्रॉप पर कहीं पर भी सरदार साहब का चित्र नहीं है। उस समय अखबारों ने लिखा कि एक सप्ताह के बाद ही आपके यहां कार्यक्रम हो रहा है और सरदार साहब गायब हैं। हम सरदार साहब का नाम दे रहे हैं, हमारे अध्यक्ष जी ने उल्लेख नहीं किया। आपने उसका उपयोग करने की कोशिश की, लेकिन आप यह भी याद करें कि सरदार साहब और बाबा साहेब अम्बेडकर को 'भारत रत्न' कब मिला? इतना समय बीच में क्यों चला गया? आप चर्चा करें, आप आरोप लगाएं, यह तो राष्ट्रपति जी के अभिभाषण के बाहर का विषय था, लेकिन फिर भी आपने उठाया, तो अच्छी बात है। जब आप ऐसे विषय उठाते हैं, तो चार उंगलियां खुद की तरफ होती हैं, आप यह न भूलें, यही मेरा कहना है।

आप जानकर हैरान होंगे कि हमारे देश में इस प्रकार से काम हुए हैं। हो सकता है कि आपकी कार्यशैली में इस प्रकार की बारीकियों में जाने का शायद स्वभाव नहीं होगा। मेरा यह सौभाग्य रहा कि मैं बहुत लम्बे अर्से तक मुख्य मंत्री रहा हूं। आज़ाद साहब भी मुख्य मंत्री रहे हैं, इसलिए इनको पता है कि बहुत बारीकियों में जाना पड़ता है। शरद जी भी बहुत लम्बे अर्से तक मुख्य मंत्री रहे हैं, इनको पता है कि बहुत बारीकियों में जाना पड़ता है। मुख्य मंत्री इधर-उधर नहीं जा सकता है। हम सब जो यहां पर मुख्य मंत्री रहे हैं, सबको पता है कि यहां पर मुख्य मंत्री तो बहुत कम आते हैं, यदि आते हैं, तो छोटा सा डिपार्टमेंट लेकर

रहते हैं। मेरे जिम्मे एक बड़ा काम आ गया है, इसलिए नहीं कि वह आदत भी काम आ रही है। हमारे देश में पिछले वर्षों में जो सिंचाई के प्रोजेक्ट तैयार हुए, तो डैम बन गया होगा, लेकिन यह पानी क्यों है? यह पानी खेती के लिए है। हमने 40-40, 50-50 साल तक केनाल नेटवर्क ही नहीं बनाया । यानी कोई कल्पना कर सकता है वह छः मंजिला मकान बनाए और उसमें स्टेयरकेस और लिफ्ट भी न हो, तो ऐसे-ऐसे काम हुए । मैंने उनमें से 99 को आइडेंटिफाई किया, हजारों, करोड़ों रुपए की योजना से काम चालू किया। किसानों के पास पानी पहुंचे, इस दिशा में काम किया है। आज 50 योजनाएं पूरी हो चुकी हैं। बाकी की योजनाएं जल्दी से पूरी हों, इस दिशा में काम चल रहा है। सवाल है, आपने बनाया, अच्छा बनाया। अच्छा काम किया, अच्छा है , लेकिन सोच अधूरी, काम अधूरा और रुपए गए तथा परिणाम भी नहीं मिला। अच्छा होता अगर कॉम्प्रिहेंसिव होता, इंटिग्रेटेड एप्रोच होती, होलिस्टिक भी होती, तो आप ही के समय जो काम हुए हैं, उसमें भी अगर वे पूरे किए होते, तो देश का भला होता।

(3U/LP पर जारी)

LP-SKC/4.35/3U

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत) : आपने नहीं किया, यह मैं नहीं कह रहा हूं, लेकिन कुछ करने जैसे काम कैसे करने चाहिए, उसमें एक बहुत बड़ी कमी रह गई। जिन-जिनको शासन करने का अवसर मिला है, उन लोगों का यह दायित्व बनता है, इसलिए आपने देखा होगा कि हमने सत्ता में आकर एक बड़ा बदलाव किया है।

हमारे देश में ज्यादातर बजट एलोकेशन होने को ही ज्यादा संतोषजनक माना जाता है। ताली बज जाती है, वह एलोकेट हो गया। आउटले की तरफ देखने वाली संख्या बहुत कम है, आउटपुट पर देखने वाली संख्या उससे भी कम है और आउटकम की तो चर्चा ही नहीं होती थी। हमने पूरा वर्क कल्चर ऐसा बना दिया। इस सरकार ने आग्रह रखा है और पार्लियामेंट में आउटकम रिपोर्ट रखते हैं, ताकि पता चल सके कि जिस काम के लिए रुपया निकला था, वह उसी काम में गया कि नहीं गया? इसीलिए हमारा प्रयास आउटकम पर बल देने की दिशा में रहना चाहिए।

महोदय, किसानों की आमदनी बढ़ाने के विषय की यहाँ चर्चा हुई है। मैं हैरान हूं कि किसान की आमदनी डबल होने पर किसको एतराज़ हो सकता है? इस पर किसी को कोई एतराज़ नहीं हो सकता है। हम इसलिए नहीं कह रहे हैं कि उसके साथ कोई राजनीति है, बल्कि यह बात यहाँ बैठे हर व्यक्ति के दिल में है कि यह एक ऐसा काम है जो हमें करना चाहिए। यह कैसे होगा? ज़मीन के टुकड़े बढ़ते जा रहे हैं। परिवार की संख्या बढ़ती है - अगर उसकी दस बीघा ज़मीन है, वह बच्चों में बंट जाती है, तो दो बीघा, एक बीघा हिस्से में आ जाता है। यह कठिनाई है। हमें टेक्नोलॉजिकल इंटरवेंशन, एग्रो टेक्नीक पर जाना ही पड़ेगा, हमें modernize होना ही पड़ेगा। अगर हम यह करते हैं तो बदलाव होगा।

महोदय, Soil health card एक प्रयास है। Per drop-More drop, micro irrigation एक प्रयास है।

महोदय, स्प्रिंकलर - एक जमाना था, जब हमारे देश में किसान सोचते थे कि flood irrigation के बिना शुगरकेन हो ही नहीं सकता। वह इस कन्विक्शन वाला था। वह यही मानता था कि गन्ने की खेती के लिए खेत पानी से लबालब भरा होना चाहिए। लेकिन अनुभव से - मैं तो गुजरात में था, मेरा तो कम्पल्सरी नियम था, अब स्प्रिंकलर से शुगरकेन हो रही है और शुगर कंटेट का लेवल बहुत ऊंचा आया है। अब यह धीरे-धीरे देश भर में हो रहा है। अब पानी बचेगा। ऐसे कई प्रयोग हैं। पहले जो होता था, वह हम सबको मालूम है कि जो केले की खेती करते थे, केले की खेती करने वाले वे लोग, केले का फल मिलने के बाद, उसका जो थड़ खड़ा रहता है, उसको निकालने के लिए उन्हें पैसा देना पड़ता था, जोकि एक एकड़ पर 5 हज़ार, 10 हज़ार, 15 हज़ार रुपये का खर्च आता था। हमारे यहाँ एग्रीकल्चरल युनिवर्सिटी ने जो परिणाम दिया है, उसके अनुसार उन्होंने केले के थड़ में से फ्रैब्रिक बनाया, कपड़े बनाए और अब बहुत बढ़िया क्वालिटी के कपड़े बन रहे हैं। इतना ही नहीं, जहाँ सूखी भूमि है, यदि उसको वहाँ काटकर डाल दिया जाए तो वहाँ 90 दिनों तक पेड़-पौधे बिना पानी के आगे बढ़ सकते हैं। अब जो वेस्टेज था, वह वेल्थ में क्रिएट हुआ है और आज उसको लेने के लिए लोग आते हैं। अब वे 10 हज़ार, 15 हज़ार रुपये पर एकड़ का दे रहे हैं। हमारे देश में एग्रीकल्चरल का जो वेस्ट है, यदि हम उसी पर बल दें तो भी हम उनकी और देश की इनकम होने में मदद कर सकते हैं। हमारे देश में यदि यहाँ शुगर ज्यादा हो जाए, तो भी किसान मरेगा, कम हो जाए, तो भी किसान मरेगा। शुगर की

ज्यादातर फैक्टरियाँ किसानों के द्वारा चलाई हुई हैं। हमने ethanol पर 10 परसेंट कर दिया, इस कारण से, जिस समय शुगर की मार्किट पर जब यह प्रेशर आएगा, क्योंकि इस पर ग्लोबल इम्पैक्ट रहता है, तब ethanol पर डायवर्ट करेंगे। इससे किसान की सुरक्षा की संभावना होगी।

हमने "किसान संपदा योजना" दी। हमें मालूम है कि हमारे लाखों, करोड़ों रुपये इसलिए बरबाद हो रहे हैं क्योंकि खेत से लेकर मार्किट तक की चेन में कई वीक प्वाइंट्स हैं। इनफ्रास्ट्रक्चर के वीक प्वाइंट्स हैं। जब हमारी बीज से बाजार तक की एक पूरी comprehensive approach होगी, तब जाकर प्रयास होगा और इसलिए हम उस दिशा में काम कर रहे हैं। मैं मानता हूं कि चाहे "ईनाम योजना" हो - "ईनाम योजना" अभी प्रारंभ हुई है। कई राज्य हैं, जिनको अपने एटीएम सेट में जो बदलाव करना चाहिए था, वह अभी भी नहीं किया है। करीब-करीब 36 हज़ार करोड़ रुपये का कारोबार है। यह किसानों ने "ईनाम योजना" पर ऑनलाइन बिक्री करके किया है। 36 हज़ार का कारोबार अपने आप में बड़ा होता है और यह एक शुभ शुरुआत है। मैं समझता हूं कि यह काफी आगे जाएगा। हमें वैल्यू एडिशन पर जाना पड़ेगा। अगर किसान हरी मिर्च बेचता है, तो उसको उसका बहुत कम पैसा मिलता है, लेकिन अगर मिर्च लाल होती है, लाल होकर पाउडर बनती है, पाउडर बनाकर उसकी पैंकिंग होती है, अगर वह पैकिंग अच्छी तरह से ब्रांडिंग होती है, तो किसान की आय बढ़ती है। हमें वैल्यू एडिशन पर जाना होगा। हमारे किसान की allied equity - आज खेत के अंदर सोलर एनर्जी

का फार्म जोड़ा जा सकता है। यह किसान की आय बढ़ा सकता है। सोलर पंप उसकी बिजली भी पैदा कर सकता है। यह सोलर पंप चला सकता है, डीज़ल का खर्च कम कर सकता है, बिजली का खर्च कम कर सकता है।

(KLG/3 W पर जारी)

KLG-HK/3W/4.40

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत): और वह बिजली राज्य सरकारें खरीद भी सकती हैं। उससे उनके खर्चे में एक बहुत बड़ी कमी होगी। बांस, बैम्बू का 90 साल से, आपका दोष नहीं है, 90 साल से कानून बना दिया कि यह तो ट्री है, इसे काट नहीं सकते, जब कि सारी दुनिया में बैम्बू ग्रास है। अब आपको यह करना चाहिए था, तो क्रेडिट आपको जाता। हमने सोचा, आज हमने बैम्बू को ग्रास की कैटेगरी में रखा है। आज किसान अपने खेत के बाहर, बॉर्डर पर बैम्बू की खेती कर सकता है। बैम्बू की खेती से उसकी फसल को कोई नुकसान नहीं है, वह अतिरिक्त है। आज हिंदुस्तान हजारों करोड़ रुपए का बैम्बू इम्पोर्ट करता है। हम दियासलाई के लिए बैम्बू बाहर से लाते हैं, पतंग के लिए बैम्बू बाहर से लाते हैं, अगरबत्ती के लिए बैम्बू बाहर से लाते हैं। यह एक छोटा सा दायरा है, जो किसान की आय बढ़ाने की ताकत रखा है।

मधुमक्खी, अब मैं हैरान हूँ, मधुमक्खी के क्षेत्र में कितना काम हो सकता था, हम उसको नहीं कर पाए। मैं हैरान हूँ कि क्यों नहीं कर पाए? इन दिनों हमने चार वर्षों में 11 Integrated Bee-keeping Development Centres

खड़े किए हैं। आज शहद के उत्पादन में 38 परसेंट इन्क्रीज हुआ है और यह शहद दुनिया के बाजारों में जाने लगा है। सबसे बड़ी बात, जिस पर हमें ध्यान देने की जरूरत है, आज दुनिया holistic health care की तरफ चली है, दुनिया eco-friendly life की तरफ काँशस हुई है और उसके कारण chemical wax की बजाय bee wax की मांग बढ़ रही है। हमारा यह honey bee का काम इतनी अधिक मात्रा में bee wax को बल दे सकता है, जिसके कारण आने वाले दिनों में हम बहुत बड़ा global market capture कर सकते हैं। हमारा किसान साइड में एक पेड़ के नीचे बैठकर यह काम कर सकता है। पशुपालन, fisheries, poultries, value addition, ऐसी कई चीजें हैं, जिनको अगर हम एक साथ जोड़ कर किसानों के घर तक पहुंचाएंगे, तो मैं यह नहीं मानता हूँ कि किसानों की आमदनी दुगुनी करने में कोई दिक्कत हो सकती है। किसान की हालत सुधर सकती है। हम सब को प्रयास करने होंगे और हम सब प्रयास करेंगे, तो परिणाम जरूर मिलेगा। हमारा उस दिशा में प्रयास रहना चाहिए। ...(व्यवधान)...

SHRI SUKHENDU SEKHAR RAY: Sir, only *bhasan;* no action. We are staging a walk out.

SHRI DEREK O'BRIEN: Sir, only *bhasan;* we are not getting any answer. ...(Interruptions)... No action; only *bhasan*. ...(Interruptions)... We have made a non-political speech. ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: Only walk out; no talk out. ...(Interruptions)...

SHRI DEREK O'BRIEN: We want serious answers. ...(Interruptions)... No action; only *bhasan.* ...(Interruptions)...

(At this stage some hon. Members left the Chamber)

श्री नरेन्द्र मोदी: आज हमारे देश में स्वच्छ भारत अभियान का मजाक उड़ाया जा रहा है, मेक इन इंडिया का मजाक उड़ाया जा रहा है, जनधन योजना का मजाक उड़ाया जा रहा है, अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस का मजाक उड़ाया जा रहा है, काले धन पर हो रही कार्यवाही का मजाक उड़ाया जा रहा है, ...(व्यवधान)... सर्जिकल स्ट्राइक पर सवाल उठाए जा रहे हैं, ... (व्यवधान)... लेकिन आप मुझे बताइए, ओबीसी कमीशन को संविधान का दर्जा मिले, इसका क्यों विरोध करना चाहिए? इतने सालों से इसकी मांग थी, आपकी कोई मजबूरियां होंगी, आप नहीं लाए। इस सदन में इस कमेटी में डालो, उस कमेटी में डालो, लटका पड़ा है। क्या हम इस काम को नहीं कर सकते हैं?

श्री बी. के. हरिप्रसाद: हमने बोला है ...(व्यवधान)....

श्री सभापति: बैठिए, प्लीज़।

श्री बी. के. हरिप्रसाद: *

MR. CHAIRMAN: This is not the way. ...(Interruptions)... Mr. Hariprasad, sit down. ...(Interruptions)... This is not going on record. ...(Interruptions)..

श्री नरेन्द्र मोदी : यह तरीका,....(व्यवधान)... वह .आपको अमित भाई ने जवाब दे दिया है। ... (व्यवधान)... यह जब पूरा विरोध करने की हिम्मत नहीं होती है, जनता-जनार्दन को फेस करने की ताकत नहीं होती है, ... (व्यवधान)...आज

---

*Not recorded.

जो ओबीसी समाज में एस्पिरेशंस जगे हैं, आज जो ओबीसी समाज जागरूक हुआ है, ओबीसी अपने हकों के लिए मैदान में आया है ...(व्यवधान)... आपकी राजनीति खुलेआम बात करने की हिम्मत नहीं करती है, इसलिए बहानेबाजी करते हो, लेकिन इस देश का ओबीसी समाज देश को देने वालों में से है। वह अगर अपना हक मांगता है, तो मैं आग्रह करूंगा कि राजनीति छोड़ करके और नई-नई चीजें जोड़ने के नाम पर इसे रोकने का प्रयास करने के बजाय इसको पारित करें। तीन तलाक, अगर आपको लगता है कि तीन तलाक के विषय पर आप जिस प्रकार का कानून चाहते हैं, ...

(3एक्स/एकेजी पर जारी)

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत) : किसने रोका था आपको? 30 साल पहले यह मामला आपके हाथों में आया था। आपको जैसा कानून चाहिए था, वैसा बनाना था। करना तो था, लेकिन आपकी राजनीति, आप ही के एक मंत्री का हाउस में भाषण था कि तीन तलाक क्यों जाना चाहिए, लेकिन जब चारों तरफ से आवाज उठी, राजनीति आई, वोट बैंक खतरे में पड़ गया, तो अचानक से उस मंत्री को भी जाना पड़ा और उस मिशन को भी जाना पड़ा। जो कारण दिया जा रहा है, वह हिन्दुस्तान के हर क्रिमिनल कानून के अन्दर जहाँ सजा है, ये जो logic दे रहे हैं, लागू हो सकता है। अगर किसी ने किसी की हत्या की, वह घर का इकलौता बेटा है, 30 साल की उम्र है, बूढ़े माँ-बाप हैं, अब उसके जेल जाने का कानून क्यों बनाया, बूढ़े माँ-बाप क्या खाएँगे? एक हिन्दू दो शादी करे, वह जेल चला जाए, उसके लिए सजा हो, तब आपको यह विचार नहीं आया कि उसके परिवार के लोग क्या खाएँगे। सजा है ! इसलिए मैं समझता हूँ कि कोई भी इसका अध्ययन करेगा, तो उसको आश्चर्य होगा कि आप किस तरह की बात कर रहे हैं। कभी-कभी मुझे लगता है, शायद हमारे नरेश जी ने बड़ी हमदर्दी दिखाई थी, वे चीरहरण कर रहे थे, यह कहना तो कठिन है, लेकिन वे बहुत कुछ कह रहे थे। भय! जेल! हम तो भुक्तभोगी हैं। तुलसी जी यहाँ बैठे हैं। 15 साल तक हमने क्या कुछ झेला है, हमें मालूम है, लेकिन कानून कानून का काम करे कि न करे ! और आप यहाँ कहें कि किसी के बेटे को फँसाया जा रहा है, उसको परेशान किया जा रहा है, और क्या कुछ किया जा रहा है। मैं समझता हूँ कि क्या इस प्रकार की

बातें कर के हम कानून का उपहास कर रहे हैं या नहीं? यह कानून तय करेगा कि क्या होगा। इसीलिए जब आप कहते हैं कि मदद करो, ऐसे समय में मदद करो, तो कवि दुष्यंत कुमार की कविता के शब्द हैं,

"उनकी अपील है कि उन्हें हम मदद करें,
चाकू की पसलियों से गुज़ारिश तो देखिए। "

महिलाओं पर अत्याचार। मैं नहीं मानता हूँ कि महिलाओं पर अत्याचार, यह कांग्रेस, बीजेपी, इस पार्टी या फलानी पार्टी का विषय है। हो ही नहीं सकता। जो चिंता आपने जताई है, वह चिंता बहुत स्वाभाविक है, जो आज़ाद साहब ने बताई। इसलिए मैंने लाल किले से यह कहने की हिम्मत की थी कि बेटियों के लिए तो बहुत कुछ कहा जाता है, लेकिन कोई तो पूछो कि बेटा शाम को देर से घर क्यों आता है, कोई तो पूछो कि बेटा कहाँ जाता है, किसको मिलता है, कोई तो चिंता करे कि बेटों को भी संस्कार देने की जरूरत है। क्या हम सब एक स्वर से उन माताओं को झकझोर नहीं सकते, उन पिताओं को झकझोर नहीं सकते, उन शिक्षकों को झकझोर नहीं सकते? आखिर वह किसी न किसी का तो बेटा है, जो किसी बेटी के ऊपर अत्याचार कर रहा है। वह किसी न किसी का तो बेटा है। क्या हम सब एक स्वर में इस विषय पर नहीं बोल सकते हैं? आखिरकार यह एक सामाजिक दूषण है और उसमें जितना ज्यादा हम मिल कर काम करेंगे, उतना अच्छा होगा। इसलिए मैं चाहता हूँ कि हमें इन सारी चीजों में मिल कर चलना चाहिए। 'उज्ज्वला योजना' महिला सशक्तिकरण का एक बहुत बड़ा काम है।

लेकिन हमें भी यह सोचना होगा और मैं तो चाहूँगा और इस सदन के माध्यम से स्टार्टअप वालों से खास आग्रह करूँगा कि हमें देश में clean cooking का काम मिशन मोड में करना चाहिए।

(3वाई/एससीएच पर जारी)

SCH-KSK/4.50/3Y

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत) : हो सके तो सोलर ऊर्जा आधारित ऐसे नये चूल्हों का इनोवेशन हो, ताकि गरीब को खाना पकाने के लिए एक नया पैसा खर्च न हो और गैस ट्रांसपोर्टेशन के खर्च भी बच जाएं, अपने ही घर में सोलर चूल्हों की व्यवस्था हो। आधुनिक इनोवेशन से ऐसे चूल्हे बन सकते हैं। क्लीन कुकिंग, हमारे सामाजिक जीवन के लिए, एनवायर्नमेंट के लिए, महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। ये कोई राजनीतिक एजेंडा के कार्यक्रम नहीं हैं, ये देशहित के काम हैं। हम मिल-बैठ करके इनको आगे बढ़ाएं।

अब चर्चा हुई कि स्वच्छ भारत के एडवर्टाइज़मेंट पर इतना खर्चा हुआ। मैं ऐसी कोई बात कहना नहीं चाहता हूं, जो किसी को बुरी लगे, लेकिन आप भी सरकार में रहे हैं और आप सार्वजनिक जीवन में जीते हैं। शौचालय या स्वच्छता ऐसे विषय हैं, जो जितनी मात्रा में infrastructural issues हैं, उससे ज्यादा behavioural issues हैं। यह आदत का विषय है, दुनिया में इस विषय पर अध्ययन करने वाले हर व्यक्ति ने यह कहा है। जब आप सरकार में थे, तब आपका भी इसी पर फोकस था कि जब तक behavioural changes नहीं आते हैं,

तब तक इसमें breakthrough नहीं हो सकता है। इसके लिए जो एडवर्टाइज़मेंट दिखाए जाते हैं, वे सरकार के कार्यक्रमों की जगमगाहट नहीं हैं, उनके माध्यम से behavioral change के लिए छोटी-छोटी घटनाओं को दिखा करके, लोगों को शिक्षित करने का काम हो रहा है। यह बात कहने से पहले हम यह न भूलें कि गरीब आदमी के पैसों से खजाने में आए हुए धन से परिवार के कुछ लोगों के जन्मदिन पर अखबारों में एक-एक पेज के एडवर्टाइज़मेंट्स छपवा करके दिए गए थे। उसमें देश के कितने रुपये खर्च हुए, ज़रा इसका हिसाब भी लगा लीजिए। एक ही परिवार के लोगों के जन्मदिन के एडवर्टाइज़मेंट पर कितने रुपये खर्च हुए होंगे, आप उसको सुनकर चौंक जाएंगे। लेकिन यह जो खर्चा हुआ है, यह behavioral change लाने के लिए है, जिसके लिए हम सबको प्रयास करना पड़ेगा। जहां पर आपकी राज्य सरकारें हैं, आप उनको भी कहिए कि behavioural change के लिए बजट एलॉट करें। लोगों को शिक्षित करें।...(व्यवधान)...

श्री आनन्द शर्मा : आपने जो हज़ारों करोड़ रुपये खर्च किए...(व्यवधान)...

श्री सभापति : आप बैठ जाइए, प्लीज़।...(व्यवधान)... ठीक है, आप बैठ जाइए।...(व्यवधान)... This is not going on record.

श्री आनन्द शर्मा : *

MR. CHAIRMAN: Why are you wasting your energy? ...(Interruptions)... Why are you setting a bad precedent?

...(Interruptions)... When nothing is going on record, why should you waste your energy and set a bad precedent? ...(Interruptions)...

SHRI ANAND SHARMA: It is not a bad precedent. ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: It is a bad precedent. ...(Interruptions)...

श्री नरेन्द्र मोदी : सभापति जी, हमारे राष्ट्रपति जी ने...(व्यवधान)....

***Not recorded.**

SHRI ANAND SHARMA: I am following your ruling. ...(Interruptions)... I am following your direction. ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: It is a bad precedent. ...(Interruptions)... Hundred percent, it is a bad precedent. ...(Interruptions)... You are disturbing a speaker and suddenly standing up without the permission of the Chair. It is a bad precedent. ...(Interruptions)...

SHRI ANAND SHARMA: You had said that if we want to ask something, we should stand up.

MR. CHAIRMAN: Yes, afterwards. ...(Interruptions)...

SHRI ANAND SHARMA: You did not say 'afterwards'. ...(Interruptions)...

श्री नरेन्द्र मोदी : सभापति जी, यहां पर हमारे माननीय आज़ाद साहब ने बोफोर्स के मुद्दे को बड़े विस्तार से कहा और बड़ा क्रेडिट लेने की कोशिश की।...(व्यवधान)... मैं कुछ क्वोट्स पढ़ना चाहता हूं। ये क्वोट्स कांग्रेस के एक वरिष्ठ मंत्री और बाद में निर्विवादित चुने गए राष्ट्रपति, श्रीमान् आर. वेंकटरमण जी की आत्मकथा का हिस्सा हैं। उनकी आत्मकथा है - "जब मैं राष्ट्रपति था "। जब उनकी मुलाकात जे.आर.डी. टाटा से हुई, उस मुलाकात का ब्यौरा उन्होंने इस किताब में लिखा है। इसमें उन्होंने लिखा है, "टाटा ने कहा तोप और दूसरे रक्षा सौदों में राजीव गांधी या उनके परिवार को लाभ हुआ हो या न हुआ हो, लेकिन इसको नकारना मुकिश्ल होगा कि कांग्रेस पार्टी को कोई कमिशन नहीं मिला।" यह मैं वेंकटरमण जी की किताब पढ़ रहा हूं, इसमें मेरा अपना कुछ नहीं है। आगे उन्होंने लिखा है, "उन्हें लगता था कि 1980 के बाद से उद्योगपतियों से चंदा नहीं मांगा गया है और पार्टी का खर्चा ऐसे सौदों पर मिलने वाले कमिशन से चलता है।"

(3Z/RPM पर जारी)

RPM-GSP/3Z/4.55

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत) : सभापति महोदय, यह तो आर. वेंकटरमन जी ने कहा था। वे आपके बड़े वरिष्ठ नेता और राष्ट्रपति रहे थे। यहां पर किसी परिवारवाद की बात आई, तो बड़ा दुख हुआ और गुस्सा भी आता है। यह तो बड़ी स्वाभाविक बात है और मैं भी नहीं चाहता हूं कि आपमें से किसी की राजनीति को

चोट पहुंचे। यह मैं नहीं चाहूंगा, लेकिन आप ही के एक महाशय, जिनकी मीडिया में रिपोर्ट आई है, उसमें उन्होंने क्या कहा- "Sultanate gone, but we behave like Sultans." सुल्तानी तो गई, लेकिन हम अभी भी सुल्तान की तरह behave कर रहे हैं। मैं जयराम रमेश जी के इस खुलेपन के लिए तो उन्हें बधाई देता हूं। महोदय, देश में निम्न-मध्यम वर्ग और मध्यम वर्ग पर महंगाई का सबसे ज्यादा प्रभाव होता है। पहले महंगाई कहां तक पहुंची थी, वह आप सब जानते हैं। हमने कोशिश की है कि महंगाई 2 से 6 प्रतिशत के बीच नियंत्रित रहे। जिस तेजी से और जिस क्रम से महंगाई बढ़ रही थी, अगर उसी क्रम और तेजी से बढ़ती रहती, तो आज मध्यम वर्ग और निम्न-मध्यम वर्ग का जीना कितना मुश्किल हो जाता। इसकी आप स्वयं कल्पना कर सकते हैं। इन कदमों को उठाकर मध्यम और निम्न-मध्यम वर्गों के परिवारों की सुरक्षा करने और उन्हें बचाने का काम हमने किया है।

महोदय, गरीब और मध्यम वर्ग के परिवार यदि अपने मकान बनाना चाहते हैं, तो बैंक की ब्याज दर में कटौती कर के और उसे सब्सिडी देकर उसे प्रोत्साहित करने का बड़ा और महत्वपूर्ण काम इस सरकार ने किया है। "प्रधान मंत्री आवास योजना शहरी" में हमने नई कैटेगरीज निर्माण की हैं और घर बनाने के लिए 9 लाख रुपए तक के कर्ज में 4 प्रतिशत की छूट ब्याज में दी है। मध्यम वर्गों की एस्पिरेशन होती है कि वह अपना घर बनाए, उसकी उस एस्पिरेशन को पूरा करने का काम हुआ है। यदि 12 लाख रुपए तक का मकान है, तो ब्याज में 3

प्रतिशत रियायत देने का काम किया है। इसी प्रकार से गांवों के अंदर जिनके पुराने घर हैं, अब चूंकि परिवार बड़ा हो गया है, पुराने घर का विस्तार करना है या उसमें एक कमरा बनाना है या दो कमरे बनाने हैं, तो 2 लाख रुपए तक कर्ज में हमने 3 प्रतिशत रियायत दी है। ये सारी चीजें मध्यम वर्ग और निम्न-मध्य वर्ग को अपनी एस्पिरेशन्स को पूरा करने में बहुत काम आने वाले विषय हैं।

महोदय, उसी प्रकार से रियल एस्टेट रेगुलेटरी एक्ट यानी 'रेरा' बनाया गया है। मध्यम वर्ग जो अपना मकान बनाने के लिए चिन्तित रहता था, उसे इसके माध्यम से सुरक्षा प्रदान की गई है। हमने उसमें कई संशोधन किए हैं, जिनका लाभ सामान्य वर्ग को मिलेगा। हमने कंज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट और उसमें कंज्यूमर एम्पावरमेंट पर भी बल दिया है। लोगों को सस्ती दवा मिलें, इसके लिए भारतीय जन औषधि केन्द्रों की स्थापना की है और 800 से ज्यादा दवाएं बहुत सस्ते में दी हैं। आपने देखा होगा कि जो लोग इन दवाओं का सेवन कर रहे हैं, उनका दवाओं पर अब 60 से 70 परसेंट तक कम खर्चा हो रहा है। हमने 'नी प्लांट्स' का खर्च कम किया है। हमने स्टेंट का खर्च कम किया।

महोदय, हमारे देश में इन दिनों किडनी की समस्या बहुत ज्यादा हुई है। हमारे यहां रूटीन व्यवस्था में डायलिसिस के लिए डिस्ट्रिक्ट हैडक्वार्टर या बड़े शहर में जाना पड़ता था।

(4ए/पीएसवी पर जारी)

PSV-SK/4A/5.00

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत): हमने एक मिशन मोड में काम किया। करीब 500 से अधिक जिलों में बहुत ही नॉमिनल चार्ज पर यह डायलिसिस का मूवमेंट चलाया है। अब वहाँ तक हम पहुँचे हैं, अब तक की मेरी जानकारी है कि करीब 22 लाख से ज्यादा डायलिसिस के सेशंस हुए। ये सारे मानवता की दृष्टि से करने वाले काम हैं, जिन पर हमने बल दिया है। एलईडी बल्ब के कारण क्या लाभ हो रहा है, यह आप भली-भाँति जान रहे हैं। हजारों करोड़ रुपये मध्यम वर्ग की जेब में बच रहे हैं, करीब-करीब 15 हजार करोड़ रुपये बच रहे हैं।

राष्ट्रपति जी ने एक विषय अपने भाषण में कहा है और उस विषय में मेरा मत है कि यह कोई सरकार का काम नहीं है और न ही यह किसी दल का काम है, बल्कि देश की जिनको चिन्ता है, ऐसे सभी लोगों का यह काम है और इस सदन में बैठे हुए हर किसी का काम है तथा सबका बराबर काम है। वह विषय राष्ट्रपति जी ने स्पर्श किया। पहले जब प्रणब दा राष्ट्रपति थे, तब उन्होंने भी उल्लेख किया था और इससे पहले भी कई लोगों ने इस विषय पर अपने विचार रखे हैं। वह है- लोक सभा और विधान सभाओं के चुनाव साथ करवाना। यह ठीक है कि राज्य सभा में जो आते हैं, उनको यह चुनाव की आपा-धापी क्या होती है ...(व्यवधान)... जो लोक सभा और राज्य सभा दोनों में आये हैं, उनको पता है। कुछ लोग पराजित होकर बाद में राज्य सभा में पहुँचते हैं, उनको भी यह अनुभव है कि क्या कठिनाई रहती है, लेकिन कभी सोचना होगा ...(व्यवधान)... कभी सोचना होगा कि एक स्वस्थ परम्परा हो, क्योंकि भारत का लोकतंत्र काफी

मैच्योर हुआ है। क्या हम सब हिम्मत करके एक स्वस्थ परम्परा की दिशा में जा सकते हैं? मैं कहना चाहता हूँ कि 1967 तक यह चला है। लोक सभा और विधान सभा चुनाव साथ हुए हैं। यह लगभग 1967 तक चला है। उसमें शायद एक-दो अपवाद हो सकते हैं, लेकिन यह चला है। उस समय किसी को कोई तकलीफ नहीं हुई, लेकिन बाद में किसी न किसी राजनीतिक कारणों से असंतुलन पैदा हुआ और आज हम देखते हैं कि एक चुनाव आया, वह पूरा हुआ तो दूसरे की तैयारी हो जाती है, दूसरा पूरा होता है, तो तीसरा..। अब इसका दबाव केन्द्र सरकार पर और राज्य सरकारों पर रहता है। फेडरल स्ट्रक्चर के अन्दर एक सुखद एट्मॉस्फेयर होना चाहिए। चुनाव के चार-छः महीने हम समझ सकते हैं कि तू-तू, मैं-मैं चल जाए, लेकिन चार-साढ़े चार साल तो कम से कम हम मिल-बैठ कर देश के लिए काम कर सकें, हमारी पूरी शक्ति काम में लगे, उस दिशा में हमें काम करना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि उस दिशा में एक व्यापक चर्चा हो। आप देखेंगे कि अब जब लोक सभा का चुनाव होगा, तो चार राज्य उसके साथ हैं- आंध्र, तेलंगाना, अरुणाचल और ओडिशा। कठिनाइयाँ क्या हैं, वह हम भली-भाँति जानते हैं। 2009 में लोक सभा के चुनाव में करीब-करीब 1,000 करोड़ खर्च हुए। 2014 में यह करीब-करीब 4,000 करोड़ पर पहुँचा। यानी यह 1,000 से 4,000 हो गया। इतना ही नहीं, 2014 के बाद एसेम्बली के जो चुनाव हुए हैं, उनमें अब तक करीब-करीब 3,000 करोड़ खर्च हुए। अब हम यह कल्पना कर सकते हैं कि भारत जैसा देश, जहाँ गरीबों के लिए बहुत कुछ पहुँचाना अभी हमारी

जिम्मेवारी है, हमारे यहाँ चुनावों के अन्दर 9,30,000 पोलिंग स्टेशंस पर एक करोड़ से ज्यादा लोगों की ड्यूटी लगती है, बहुत बड़ी मात्रा में सिक्योरिटी फोर्सेज़ चुनाव प्रबंधन में ही लगी रहती हैं, सिक्योरिटी के मसले में नये-नये चैलेंजेज़ उभरते जाते हैं और हमारी फोर्स बस उसी काम में लगा रहती है। यह पक्ष-विपक्ष से परे का विषय है। देशहित के विषय में, हो सकता है कि इसमें मतभेद भी हो, लेकिन तर्क की चर्चा तू-तू, मैं-मैं से न हो, एक प्रामाणिक पवित्रता से हम बहस करें, मिल-बैठ कर कोई रास्ता खोजें। मुझे लगता है कि हम इसे आगे बढ़ाने में सफल हो सकते हैं। हमने ऐसे बहुत से निर्णय किये हैं, जिनसे दुनिया के देशों को बहुत अजूबा लगता है कि जहाँ इतनी पार्टियाँ हों, वहाँ ऐसा निर्णय हो सकता है! लेकिन इसी सदन में बैठे हुए लोगों ने भूतकाल में किये हैं।

(4बी/वीएनके पर जारी)

VNK-YSR/4B/5.05

श्री नरेन्द्र मोदी (क्रमागत): श्रेष्ठ निर्णय किए हैं, आने वाली पीढ़ियों को लाभ पहुंचाने वाले निर्णय किए हैं। मैं समझता हूँ कि फिर एक बार दोनों सदन में बैठे हुए सभी महानुभावों के सामने एक बड़ा सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि हम इसको करें।

माननीय सभापति जी, सभी महानुभावों ने कई विषय उठाए हैं। राष्ट्रपति जी का अभिभाषण अपने आपमें पूर्ण अभिभाषण है। दिशा क्या है, गति क्या है, इरादे क्या हैं और सामान्य मानवी के हितों की दिशा में हम कैसे आगे बढ़ रहे हैं, जितनी समय सीमा रहती है, उसमें उसका एक खाका रख सकते हैं, वह रखने का उन्होंने प्रयास किया है। हम सब सर्वसम्मति से आदरणीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण को स्वीकृति दें और धन्यवाद

प्रस्ताव पारित करें। इसी एक अपेक्षा के साथ अपना समर्थन देते हुए, मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद।

(समाप्त)

श्री सभापति : धन्यवाद, प्रधान मंत्री जी। अन्तोनी जी।

(**MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair**)

SHRI A.K. ANTONY (KERALA): I am sorry to say that the statement of the Prime Minister that your Government has taken a decision on *One Rank, One Pension* is factually wrong. The decision on *One Rank, One Pension* was taken by the UPA Government headed by Dr. Manmohan Singh. My colleague, Shri P. Chidambaram, in his Budget Speech in February 2014 announced that our Government's agreeing to the long-pending demand of service personnel of *One Rank, One Pension* and that it would be implemented from 1.4.2014 onwards. After that, within a few days, I took a meeting with all the three Vice-Chiefs of the armed forces and Defence Secretary and Secretary, Defence Finance, and we had clarified what means *One Rank, One*

Pension. One Rank, One Pension means the service personnel, who served in the Armed Forces, of the same rank with the same length of service, whichever may be their date of retirement, they will get the same pension. It was our decision, and in the same meeting, we took a decision. We directed the Secretary, Defence Finance, to seek more funds from the Finance Ministry because we needed substantial increase. ...(Interruptions)... That decision was taken by our Government and we had also taken steps to implement that decision.

(Ends)

Pp 264 onwards will be issued as supplement.